जैसे-जैसे चूजे बड़े होते हैं ब्रीडर के चारों ओर रखी हुई गार्ड दूर करते जाईये तथा अन्त में एक सप्ताह बाद पूर्णतयाहटा दें। बीडिंग के समय रोशनी का उचित प्रबंध करें। एक 40 वॉट का बल्ब 6-7 फीट ऊँचाई पर तथा 30 से.मी. के रिफ्लेक्टर सहित 100 वर्ग फीट के लिए काफी होता है। चौथे हफ्ते में चूजों की चोंच काटिए उपर की चोंच को आधा काटकर नीचे की चोंच को केवल गर्म ब्लेड से थोड़ा घिस दीजिए। चोंच काटते समय चूजे की जीभ व अथवा उंगलियों का ध्यान रखिए। मरे हुए प्रत्येक पक्षी का पोस्टमार्टम तथा उन्हें जलाकर अथवा गहरे गड्डे में दबाकर नष्ट करना आवश्यक है।

मुर्गी पालन हेतु टीकाकरण -

0-2 दिन	-	मेरेक्स बीमारी (हेचरी से ही लगकर)
5-7 दिन	-	रानीखेत - (नाक, मुँह, पीने के पानी में)
14-15 दिन	-	आई.बी.डी. (मुँह व पानी में)
4-5 सप्ताह	-	फाउल पॉक्स (डेने की खाल भेदन)
5-8 सप्ताह	-	रानीखेत आरबी (इन्ट्रा मस्क्यूलर)
14 सप्ताह	-	फाउल पॉक्स (डेने की खाल भेदन)
15 सप्ताह	-	आर2बी (इन्ट्रा मस्क्यूलर)

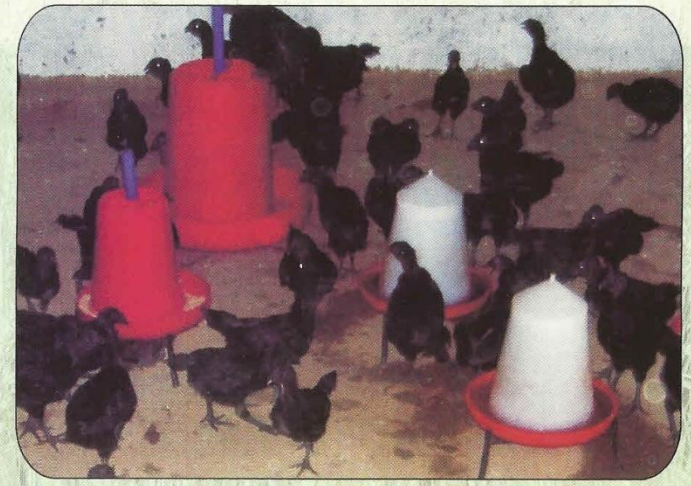

कड़कनाथ मुर्गी पालन

राष्ट्रीय कृषि नवोन्मेषी परियोजना

सहयोगी संस्था - ग्रामीण विकास ट्रस्ट

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर (म. प्र.)

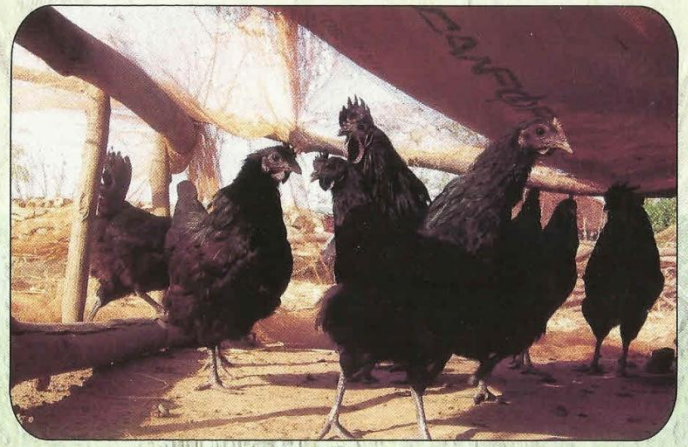

ग्रामीण विकास ट्रस्ट

स्थानीय कार्यालय : मृदु किशोर कॉलोनी, कटरा, मण्डला (म. प्र.)

क्षेत्रीय कार्यालय : 12/504, समता नगर, आनन्द कॉलोनी, रतलाम (म.प्र.)

Ph. : 07412 - 220080

E-mail : gvtratlam@rediffmail.com

कड़कनाथ मुर्गीपालन

परिचय-

कड़कनाथ झाबुआ व धार जिले में पाई जाने वाले वालर देशी की प्रजाति है। इस प्रजाति को क्षेत्र में काला मांसी के नाम से जाना जाता है, इसके अंडे हल्के भूरे, चमकदार तथा मोटी परत के होते हैं। यह एक बलि की जाति है और आदिवासी लोग इसे देवी माँ की बहल चढ़ाने में भी उपयोग करते हैं। इसका ब्लड क्रोनोनिक बीमारी में उपयोग होता है। इसका मांस कामोत्तेजक (Aphrodisiac) होता है।

कड़कनाथ मुर्गियों की विशेषताएं -

शारीरिक विशेषताएँ - प्रजातियाँ - पेंसिल, सिल्वर, गोल्डन

आर्थिक विशेषताएँ - अंडा उत्पादन 100-105 प्रतिवर्ष, 40 सप्ताह की आयु के पश्चात्
अंडे का वजन 49-52 ग्राम
नर कड़कनाथ का वजन 1-1.50 कि.ग्रा. (3-6 महीने में)
मादा कड़कनाथ का वजन - 800 ग्राम
1 कि.ग्रा. (3-6 महीने में)
20 सप्ताह में वजन 920 ग्राम

मांस की पोषकता -

प्रोटीन	: 25.47% (अधिकतम)
वसा	: 3 - 4% (न्यूनतम)
पानी	: 70.33%
फर्टिलिटी	: 55%
हेचिसीलिटी एफ.ई. एस.	: 52%

इस जाति का काला रंग होने का कारण इसमें हिमोग्लोबीन व मैलेनीन की अधिकता

मांस उत्पादन हेतु मुर्गीपालन के लिए निम्न बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए -

1. मुर्गीघर की व्यवस्था
2. स्वस्थ चूजों की व्यवस्था करना
3. संतुलित एवं पोषक आहार
4. जैविक सुरक्षा एवं रोग नियंत्रण
5. समुचित बाजार व्यवस्था
6. वैज्ञानिक जानकारी एवं प्रशिक्षण

मुर्गी घर हेतु ध्यान रखने योग्य बातें -

मुर्गीपालन प्रारंभ करने के लिए सबसे पहली चीज जो देखनी होती है, वह है मुर्गीघर की व्यवस्था करना। मुर्गी घर के लिए भूमि ऐसी जगह लेनी चाहिए जो दूसरे मुर्गी फार्मों से दूरी पर हो ताकि रोगों की संक्रमणता से बचा जा सके। स्थान निचली या पानी रुकने वाली जगह पर न हो तथा भूमि का स्तर ऊँचा हो जिससे पानी निकासी अच्छी तरह से हो सके पानी स्वच्छ व पर्याप्त मात्रा में निरंतर उपलब्ध हो। बिजली की अबाधित आपूर्ति होनी चाहिए। बिक्री केन्द्र व कुक्कुट आहार की सुलभता होनी चाहिए। मुर्गी फार्म तक यातायात का अच्छा प्रबंध होना चाहिए। मुर्गीघर बनाते समय यह पूर्व / पश्चिम दिशा की ओर आमुख होना चाहिए।

मुर्गी घर में चूजे डालने के पूर्व ध्यान रखने योग्य बातें -

घर के अन्दर का सब सामान खाद्य व पानी के बर्तन इत्यादि को बाहर निकालकर 40 प्रतिशत कास्टिक सोडा के घोल से धुलाई करें। पुराना बिछावन (लीटर) बाहर निकालें। घर के अंदर व बाहर की सब जगहों की विशेषतया कोनों को रगड़ कर धूल व गंदगी साफ करें। घर की प्रथम धुलाई 40 प्रतिशत कास्टिक सोडे के घोल से तथा दूसरी बार किसी अच्छे जीवाणु नाशक जैसे फिनाइल इत्यादि से होनी चाहिए। धुलाई में घर की छत, जालियाँ तथा गन्दा पानी बाहर जाने की जगह का विशेष ध्यान देना चाहिए। फ्लेम गन (जलाने की मशीन) द्वारा फर्श, दीवार व कोनो में जलाकर किटाणु नष्ट करें। मैलाथियोन या योमिथियोन के 1 प्रतिशत घोल को मुर्गीघर में छिड़काव कीजिए। चूने से दीवार छत व फर्श की पुताई करें। लकड़ी के सब आकारों की किसी अच्छे मोटे रंग से रंगाई करें। चूजे आने से 2-3 सप्ताह पूर्व घर की सफाई करके खाली रखिए। घर के प्रत्येक भाग यानी जाली, दीवार, छत, फर्श आदि की टूट-फूट की मरम्मत करें ताकि बरसाती पानी अथवा जंगली जानवर एवं बाह्य पक्षी व चूहों को अंदर आने से रोका जा सके।

नया लकड़ी का बुरादा अथवा धान के छिलके का 3-5 से.मी. मोटी परत का बिछावन (लीटर) तैयार करें। साफ किए हुए घर के सब सामान जैसे ब्रीडर, खाने व पानी के बर्तन, गार्ड इत्यादि को घर में उचित स्थान पर लगा लें। घर के कोनों को गार्ड अथवा अन्य किसी प्रकार से गोलाकार कीजिए ताकि चूजों को कोने में इकट्ठा होने से रोका जा सके। स्वचालित थर्मोस्टेट द्वारा नियंत्रित ब्रीडर का ही प्रयोग करें। आज कल इन्फ्रारेड किस्म के लेम्प भी ब्रीडिंग के लिए उपयोग किए जा सकते हैं।

मुर्गी घर में चूजे डालने के बाद ध्यान रखने योग्य बातें-

प्रत्येक बाक्स पर लिखे चूजों की संख्या वास्तविक गिनती को मिलाईये तथा बाक्स के उपर लिखे, सभी निर्देश ध्यान से पढ़िये। चूजों की सावधानी से गिनती करके छोड़ें। चूजों को हमेशा खाद्य व स्वच्छ पानी दीजिए।